सुरक्षित रक्त संचारण

डॉ. नरेश पुरोहित

मानव द्वारा किए तकनीकी चमत्कारों के बावजूद रक्त की सुरक्षित व विश्वसनीय आपूर्ति अभी दुनिया भर के करोड़ों लोगों की पहुंच के बाहर की चीज़ है। कई देशों की सरकारों में प्रतिबद्धता और सहयोग की कमी इसका प्राथमिक कारण है। यही वजह है कि विकासशील देशों में सुरक्षित रक्तदाताओं की भारी कमी होने के साथ-साथ रक्त उत्पादों की गुणवत्ता पर नियंत्रण और उनका परीक्षण भी नहीं हो पाता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार विश्वभर में एच.आई.वी संक्रमण के 5 से 10 प्रतिशत मामले रक्त या रक्त उत्पादों के (ट्रांसफ्यूज़न) द्वारा होते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि हर साल 56 लाख नए लोग एच.आई.वी. से संक्रमित हो जाते हैं। संगठन के रक्त सुरक्षा निदेशक डॉ. जीन इमेन्युअल कहते हैं कि ''एच.आई.वी. के निदान सम्बंधी परीक्षण 15 वर्ष पूर्व ही व्यावसायिक रूप से उपलब्ध हो गए थे, परन्तु आज भी ऐसे कई देश हैं जो दान किए गए रक्त के 100 प्रतिशत परीक्षण की गारंटी नहीं दे सकते हैं।'' कई देशों में अभी भी संगठित रक्त संचारण सेवाएं नहीं हैं। वे अभी भी परिवारजनों पर या पैसा देकर रक्त प्राप्त करने वालों पर निर्भर हैं। जबकि विकसित देशों में रक्त आपूर्ति का 98 प्रतिशत हिस्सा स्वैच्छिक या निशुल्क रक्तदाताओं द्वारा प्राप्त होता है।

विकासशील देशों में दूसरा मुख्य मुद्दा खून के अनुचित व अनावश्यक इस्तेमाल का है, खास तौर पर वहां जहां स्पष्ट चिकित्सीय दिशानिर्देश उपलब्ध नहीं होते हैं। विकासशील देशों में अधिकांशतः खून परिवार के सदस्यों या रक्तदाताओं से सशुल्क प्राप्त होता है इसलिए यदि रोगी का इलाज करने वाला डॉक्टर निर्णय लेता है कि रोगी को खून चढ़ाने की ज़रूरत नहीं है, तब भी रक्त के उपयोग के लिए मज़बूर करने के लिए उस पर सामाजिक व वित्तीय दबाव रहते हैं। रोग संक्रमित खून के द्वारा फैलने वाले प्रमुख रोग हेपटाइटिस बी व सी, सिफलिस, मलेरिया सी. सिफिलिस, मलेरिया एवं चैगास हैं। एक अनुमान के मुताबिक प्रत्येक वर्ष असुरक्षित रक्ताधान एवं इंजेक्शन के कारण लगभग 80 लाख से 1 करोड़ हेपटाइटिस-बी वायरस के संक्रमण से, 23 से 47 लाख, हेपटाइटिस-सी वायरस के संक्रमण से और 80 हज़ार से 1 लाख 60 हज़ार एचआईवी संक्रमण होते हैं।

रक्त की कमी विकसित एवं विकास-शील दोनों देशों में है। विकासशील देशों में महिलाएं एवं बच्चे, विशेषकर गरीब सबसे ज़्यादा प्रभावित होते हैं। विश्व भर में हर वर्ष लगभग 5 लाख महिलाओं की मृत्यु गर्भावस्था से जुड़े कारणों के चलते होती है। इन मौतों में से लगभग 25 प्रतिशत मौतें खून की कमी के कारण होती हैं। यदि सुरक्षित खून उपलब्ध हो तो इनमें से कइयों की जान बचाई जा सकती है। सुरक्षित रक्ताधान की ज़रूरतवाला दूसरा प्रमुख समूह खून की कमी से गंभीर रूप से पीड़ित बच्चों का है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के 191 सदस्य देशों में से 70 से भी कम देश, राष्ट्रीय रक्त कार्यक्रम के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन की सिफारिशों को पूरा करते हैं। और इससे भी कम सदस्य देश खून के ज़रिए फैलने वाली बीमारियों के लिए खून का पर्याप्त परीक्षण करते हैं या

ताज़े खून के तमाम घटक और अन्य रक्त-उत्पादों का मूल स्रोत तो रक्तदाता ही है। इसलिए रक्त संचारण की सुरक्षा रक्तदाता के सुरक्षित चुनाव से ही शुरू हो जाती है। रक्तदाता और रक्त प्राप्त करने वाले की सुरक्षा के लिहाज से दाता का स्वस्थ होना और निशुल्क वॉलंटियर होना ज़रूरी है। चूंकि हरेक वॉलंटियर का पूरा परीक्षण सम्भव नहीं इसलिए सुरक्षा की तसल्ली हेतु उसके द्वारा दिए उत्तरों, उसके चिकित्सीय इतिहास, आमतौर पर ली जाने वाली दवाओं जैसी चीजों पर निर्भरता बढ़ जाती है।